भगवत् कृपा

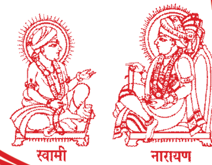

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 30 अंक : 5	25.9.2007 मंगलवार (सितंबर – अक्तुबर)	प्रति अंक : 10.00

दीपावली शुभाशीष.....

श्रीजी महाराज ने

कल्याण और **आत्यंतिक कल्याण** एवं **मुक्ति** और **आत्यंतिकी मुक्ति** के बीच

आकाश और **जमीन** जितना फर्क बताया है।

'कल्याण' तो प्रभु का आसरा करने वाले हर एक का है ही;

लेकिन **'आत्यंतिक कल्याण'** के लिए परमात्मा की कहो या परमतत्त्व की निष्ठा अनिवार्य है

और

हम सभी तो 'आत्यंतिकी मुक्ति' के लिए लगे हुए हैं...

तो, ऐसी निष्ठा में सूतभर भी कच्चापन-खोखलापन हो,

उसे दूर करने के लिए नए वर्ष के प्रारंभ में गुरुचरणों में प्रार्थना करें।

लेकिन, साथ में इतना भी स्पष्ट समझ लें कि –

ऐसी **'प्रत्यक्ष की निष्ठा' का मतलब किसी व्यक्ति विशेष में प्रतीति नहीं,**

बल्कि **दिव्यविग्रह सहजानंद स्वामी के मूलभूत स्वरूप की तत्त्वानुभूति है!!**

केवल **'स्वरूपानुभव'** सिद्धदशा प्राप्त करवा कर रिद्धि-सिद्धि भी दें

और

उसका सत्संग वैभवशाली भले ही लगे; परंतु वह **'ब्राह्मीस्थिति'** नहीं ही है।

उस हेतु तो विचार और संकल्प की समग्रतया संपूर्ण निर्मूलता चाहिए,

जिससे कि मायिक विचार और संकल्प का दोबारा सजीवन होना - उत्थान पाना - जाग्रत होना शक्य ही ना हो।

जैसे पका हुआ आम डाली से अपने आप टपक जाता है, यूं उसकी वासना और स्वभाव निर्मूल हो गए होते हैं।

यहाँ केवल 'गुणातीतभाव' में ही दृढ़ रहा जाता है

और

मानसिक एवं भावात्मक भूमिका संपूर्ण विलीन हो जाती है।

संत को ही अपनी आत्मा माना जाता है

और

भीतर का साक्षी भेदे जाने पर मायिक मन व चित्त यहाँ पिघल जाकर दिव्य बनता है।

स्वरूप के साथ ऐसा दिव्य ऐक्य प्राप्त होने पर उसे समग्र सत्संग में दिव्यता का एहसास होते हुए

महाराज के सर्वोपरि कर्ता-हर्तापन और प्रगटपन का ऐसे मुक्तों में अनुभव होता है

और... वह आनंद अखंडित रहता है।

ऐसी दिव्य एकता की पराकाष्ठा-निरपेक्षज्ञान, सेवा, प्रेम और भक्ति का समन्वय

गुरुदेव की कृपा से सभी को जल्द से जल्द सिद्ध हो –

नए वर्ष के इस आध्यात्मिक संकल्प को स्वामिश्रीजी और प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप

ज्ञानसमाधि के रूप में ब्राह्मीस्थिति प्राप्त करवा कर साकार कर दें – यही नए वर्ष के नए दिनों में याचना है।

– श्री अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग पत्रिका (१९७३) के सौजन्य से

✡✡✡

आओ! हर्ष-उमंग-उल्लास की मंगलमया घड़ियों में अपने आपको पिरोएं...

'आओ रे भाईयों, आओ रे भक्तों, आओ रे अक्षर के मुक्तों...' आप सबको आश्चर्य होगा कि हमें यूं कौन बुला रहा है ? यह है आपकी चिरपरिचित '**भगवत् कृपा**'– जो कि आपको तहेदिल से आमंत्रित कर रही है... मंगल त्यौहारों की आहट मात्र सुन कर लेखनी नाचने बेताब हो उठी है... ऐसा लगता है मानो 'भगवत् कृपा' को ही मंगलकारी पर्वों की 'महक' सर्वप्रथम आने लगी है...

मूलतः स्वामिनारायण संप्रदाय का इतिहास निहारें तो **भगवान स्वामिनारायण** स्वयं '**उत्सवप्रिय**' थे। और...गुणातीत समाज के मुक्तों के लिए तो वर्ष के सभी महीने कोई न कोई उत्सव से भरपूर हैं ही... अकसर सभी स्वरूपों से सुना है कि जीव की विडम्बना है कि वह हर पल भजन करने-माला फेरने में अपना मन पिरो नहीं सकता। लेकिन, प्रभुधारक संत तो इसी उद्यम में लगे रहते हैं कि उनके संबंध में आए मुक्त को वे प्रभु के रंग से रंग दें और इसी हेतु वे उत्सवों की परंपरा जारी ही रखते हैं; ताकि भक्तिरूप सेवा से प्रभु व प्रभुधारक संत की मूर्ति की स्मृति में सभी निरंतर निमग्न रहें। सो, आओ! उत्सवों की निम्न श्रृंखला में हर्ष-उमंग-उल्लास से क्यों न अपने आपको पिरो लें —

१ अक्तुबर, सोमवार '०७ यानि–

प.पू. काकाजी के पनौते मानसपुत्र **प.पू. दिनकरभाई का प्राकट्य दिन...**

- स्वामिनारायण भगवान का भजन, प.पू. काकाजी की मूर्ति की आराधना और प्रभु के संबंध वालों की सेवा – यही इनका पल-पल का जीवन बना है।
- अपनी बेनमून सरलता के कारण सभी गुणातीत स्वरूपों, गुणातीत समाज के संतों एवं मुक्तों की वे प्रिय व आत्मीय 'विभूति' हैं!
- संसारी होते हुए जलकमलवत् साधु स्वरूप हैं व अहम्शून्य 'प्रतिभा' है इनकी!
- प्रथम मिलन में ही इनका सरल व्यक्तित्व मुमुक्षु को साधुता का एहसास कराता है!

❋ विषय से बिलकुल उदासीन हैं... सो, भरोसेमंद पथप्रदर्शक हैं!

❋ इनके संबंध से बाहरी व आंतरिक जीवन उज्ज्वल बनता है!

❋ संबंध में आए मुक्तों को 'ब्रह्म की मूर्ति मान कर' जीते वे एक आदर्श **गुणातीत स्वरूप** हैं!

❋ इनका प्रत्येक हलन-चलन मानो गुरुभक्ति का एक पावन हवन है

और

❋ ऐसे हवन में अपने संपूर्ण व्यक्तित्व की आहुति देकर सभी का केवल परम श्रेय करने के लिए ही उनका जीवन है।

आज प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई द्वारा धरातल पर प.पू. काकाजी के प्राण धबक रहे हैं। और... प.पू. दिनकरभाई ने डंके की चोट पर साबित कर दिया है कि भगवान अखंडित रखे गुणातीत गुरु के पास यदि टोटल समर्पण हो और उसकी कृपा हो जाए तो गृहस्थ-संसार में रहते हुए भी कोई गुणातीत स्थिति को प्राप्त कर सकता है... तभी तो समता और साधुता के गुणों से सुशोभित होकर विषयों की माया नगरी 'अमेरिका' में प.पू. काकाजी का कार्य करने धुनी जमा कर वे बैठे हैं।

दरअसल प.पू. दिनकरभाई ऐसे धीर-गंभीर व सरल रह कर संबंध में आए जीव का यूं जतन करते हैं कि इनके दिव्य गुणों, ऐश्वर्य या सामर्थ्य में चमक-दमक नहीं दिखाई पड़ती।

दिल्ली के **प.भ. आर.एन.बंसल साहेब** का परिवार उनकी सहज श्रेयकारी योजना का ऐसा कृपापात्र है। एक बार प.पू. दिनकरभाई उनके घर गए थे। तब सहज ही बातों-बातों में प.भ. बंसल साहेब की पत्नी सौ. सुशीलाजी ने प.पू. दिनकरभाई को अपनी सारी दवाईयों के पत्ते दिखाते हुए कहा कि – ***दिनकरभाई! मुझे इतनी ज्यादा दवाइयाँ लेनी पड़ती हैं।*** प.पू. दिनकरभाई ने वो सारी दवाईयाँ खूब ध्यान से देखीं, फिर रख दीं। भोजन-प्रसाद लेने के बाद जब बंसल साहेब के घर से प.पू. दिनकरभाई निकलने लगे, तो सीढ़ीयाँ उतरते-उतरते सौ. सुशीला आंटी को कहा– ***बहनजी आपकी सारी दवाईयाँ ले आइए, मैं साथ ले जाता हूँ।*** आश्चर्य की बात है कि उस दिन के बाद सौ. सुशीलाजी को बहुत कम दवाईयाँ लेनी पड़ती हैं। मानो सारी तकलीफें प.पू. दिनकरभाई उन दवाईयों के साथ ले गए! ऐसे 'सहज' सत्पुरुष कहाँ मिलेगें? सच, गुणातीत स्वरूप हमारे लिए कितने सस्ते बने हैं? भक्तों के सुख-दुःख व तकलीफों में ये गुणातीत स्वरूप केवल शाब्दिक सहानुभूति या दिलासे द्वारा नहीं, बल्कि आधी रात को भी हमारे साथ खड़े रह कर वर्तन से सौहार्द दर्शाते हैं- आदर्श रूप बनते हैं।

सच, ऐसे गुणातीत पुरुषों के जीवन की यथार्थ झांखी लौकिक शब्दों या मूल्यांकनों में समाविष्ट करनी अशक्य ही है। आज भले ही वे अनेकों के लिए गुरु स्थान पर हैं, फिर भी, पल-पल एक साधक की अदा से जाग्रत रह कर वर्तते हैं। इसलिए उनका वर्तन ही मानो साधकों के लिए एक दिव्य दर्पण है।

हम सभी जानते हैं कि **विरुद्ध प्रकृति वाले साथी मुक्त के साथ 'मैत्री' रखने ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज खूब आग्रह रखते।** आज खुद ब्रह्मस्वरूप काकाजी स्वरूप होने के बावजूद भी पू. बापु के साथ 'मैत्री' दृढ़ रखने का एक भी मौका प.पू. दिनकरभाई चूकते नहीं है। इसी वर्ष के फरवरी व मार्च दोनों महिनों में दिल्ली-मंदिर से जुड़े मुक्तों को प.पू. दिनकरभाई का अच्छा-सा लाभ मिला... इसी दौरान सभाओं में सभी को उनकी पू. बापु के साथ की आत्मीयता का अनुपम दर्शन हुआ। दिल्ली में २६ फरवरी'०७ की सायं प.पू. पप्पाजी शाश्वत् स्मृति यात्रा की सभा में और २५ मार्च प.पू. गुरुजी के ७०वें प्राकट्य दिन की सभा में जब प.पू. दिनकरभाई को आशिष प्रदान करने प्रार्थना करी, तो दोनों ही बार प.पू. दिनकरभाई

ने स्वयं को दिए समय में से पू. बापु को पाँच मिनिट माहात्म्य दर्शन कराने का समय दिया।

विरुद्ध प्रकृति वाले साथी मुक्त के साथ 'मैत्री' रखने का प.पू. काकाजी का अभिप्राय हम भी जानते हैं; पर क्या हम उस दिशा पर अग्रसर रहे हैं? यहाँ सहज ही **प.पू. काकाजी द्वारा एक पत्र में लिखी कथावार्ता** का ख्याल आता है, जिसे प.पू. दिनकरभाई ने मानो स्वयं अपने जीवन में आत्मसात् करी है...

'...आप तो मर-मिटने वाले
और
प्रत्यक्ष की ही सर्वोपरि निष्ठा वाले
और
खूब कृपा दृष्टि वाले...
तो, आपका वह दृष्टा क्यों गायब हो जाता है?
(प्रत्यक्ष की दृढ़ता चली क्यों जाती है?)
या
पलभर के लिए भी
हमारी शांति, सुख और आनंद
क्यों चला जाता है?
या
स्वरूप की समझ
हमारी समता और समतुला को
क्यों अखंड बनाए रखती नहीं?
इस बात पर दिल की सच्चाई से गौर करके,
हम ही अपने गुरु बन कर सतत् अंतदृष्टि करके,
हमें हुई प्राप्ति की महिमा समझ कर
संबंध वाले दो-चार मुक्तों में भी यदि सुहृद्भाव रखेंगे,
तो मूर्ति के अखंड धारक बन जाएंगे।
हमें तो सभी प्रकार की अपेक्षा और इच्छा से रहित होना है
और
जिन-जिनकी भी सेवा हम लें या जिन्हें हम से लगाव है,
उनके लिए प्रार्थना और भजन करना है।
*तो, शुद्ध **'अक्षरभाव'** को पाकर–*
संत को ही अपनी आत्मा मान कर,
महाराज को व्यापकस्वरूप में सर्वत्र देखते हो जाएं
या
जो हमें डाँटे-टोके उसका केवल गुण ही लें
या
अपने से छोटे के पास भी सरल और नम्र रहें,
तो सभी को-साधक और सेवकवर्ग दोनों के
***'दोनों पाँव अक्षरधाम में'** माने जाकर*
मूर्ति का सुख मिला करेगा।
यह भी एक अनुभव की बात है।
सेवा का, ज्ञान का, क़ाबिलीयत का, पुराने-नए का,
सद्गुरुपन का या किसी भी प्रकार की सत्संग की प्रवृत्ति का
हमें अभिनिवेष न हो,
*उसके लिए **'स्वरूपयोग'** नहीं,*
***'स्वरूपउपशम्'** करना है।*
संबंध वाले मुक्तों में – हम जहाँ हों वहाँ,
किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना घुलमिल जाना है।
महिमा का यह साक्षात्कार जब तक दृढ़ नहीं करेंगे,
तब तक हमारा आनंद, शांति, सुख
हमेशा के लिए टिकेगा नहीं; भावफेर होता ही रहेगा।
तो,
भगवान और प्रत्यक्ष संत जो मिले हैं उन्हें,
वे जैसे हैं वैसे पहचानने में रही तनिक भी कसर
जल्दी से जल्दी दूर हो जाए,
उसके लिए दिल की सच्चाई से
प्रमाणिक रूप से लग पड़ना... फत्तेह है आगे...'

प.पू. दिनकरभाई ने तो मन, कर्म, वचन से प.पू. काकाजी का यूं सेवन किया है और उनके आध्यात्मिक वारिसदार बन कर गुरुभक्ति का दिव्य अर्घ्य दे रहे हैं... प.पू. काकाजी के प्रति गुरुभक्ति अदा करने की अभिप्सा और नित्य नवीन सुरुचि रखते हुए वे साधना मार्ग पर लगातार अग्रसर रहते हैं।

तभी तो उनके द्वारा शिकागो में सर्जित आध्यात्मिक

नूतन समाज को देख कर प.पू. पप्पाजी स्वरूप **प.पू. ज्योति बहन** हाल ही में बोल उठे कि –

यहाँ सत्संग हरा-भरा महसूस होता है।
(अहिंया सत्संग लीलोछम लागे छे.)

हम सभी के भाग्य का पार नहीं है कि हमें ऐसे गुणातीत पुरुषों की गोद मिली और हम इस 'हरे-भरे सत्संग' के सभ्य बने हैं। तो आओ, प.पू. दिनकरभाई के प्राकट्य दिन निमित्त सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करें कि उनके एक गुण को भी नज़रसमक्ष रख कर अब हम चलने लग पड़े। फिर, हमारी सुरुचि देख कर तो प्रभु दौड़े चले आएंगे ही!

२१ अक्तुबर, रविवार '०७ विजयादशमी – शूरवीरों का पर्व, योद्धाओं का पर्व, मर-मिटने वाले ध्येयनिष्ठों का पर्व! और... आध्यात्मिक क्षेत्र में अंतर्शत्रुओं यानि – हठ, मान, ईर्ष्या के भावों से ऊपर उठकर विजयी होने वालों का पर्व!

जीवों को श्वेत-पवित्र-निर्मल करने की सनद् देने गुरुहरि योगीजी महाराज ने मानो सांकेतिक रूप से **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** को श्वेतांबरी-पार्षदी दीक्षा दी! उन्होंने बैंड-बाजे मंगवाए और स्वयं ने भी नए - कोरे वस्त्र धारण किए। **प.पू. गुरुजी** की बातों में अकसर सुनते हैं कि–

साधु के लिए सबसे अधिक खुशी का दिन वो होता है, जब कोई जीव प्रभु के रास्ते चलने अग्रसर होता है।

इस दिन मानो गुरुहरि योगीजी महाराज के दिल में खुशी-आनंद समा नहीं रहा था, इसीलिए अपने प्यारे शिष्य **'प्रभुदास'** पर उन्होंने आशीर्वादों की झड़ी बरसा दी थी। दूसरी ओर, प.पू. स्वामिजी ने भी सेवक की अदा से केवल बापा के जीवन की ओर ही निरंतर नज़र रखी है। प.पू. स्वामिजी जब प.पू. बापा की सेवा में 'सेक्रेटरी' के रूप में सेवा करते थे, तब कईयों ने कई बार बिना कोई कसूर उनका अपमान किया... कई - कितने आक्षेप लगा कर उन्हें नीचा दिखाने की कोशिशें करी। पर, प.पू. स्वामिजी ने कभी भी अपने बचाव में सफाई नहीं दी। गुरुहरि योगीजी महाराज को ही सर्व कर्ता-हर्ता, नियंता-प्रेरक मान कर वे जीते थे... सब में बापा के ही दर्शन करके भजन का वे आधार लेते... किसी के दोष-स्वभाव-प्रकृति की ओर अपनी नज़र जाने ही नहीं दी और... 'गुरु' के पास कैसा जीवन जीना चाहिए, वो आदर्श स्थापित कर दिया।

आज प.पू. स्वामिजी व प.पू. साहेब जैसे गुणातीत स्वरूपों का देश-विदेश में विचरण पढ़ने मात्र से हमें थकान महसूस होने लगती है, तो इस आयु में उन्हें कितना कष्ट पड़ता होगा? ओहो! ये गुणातीत पुरुष हमें सुखी करने कितने गरजु-सस्ते बने हैं? कोटि! कोटि! वंदन हो गुरुहरि योगीजी महाराज को कि हमें ऐसे गुणातीत स्वरूपों की अनमोल भेंट दी है!

२५ अक्तुबर, गुरुवार '०७ शरद्पूर्णिमा – यानि पूर्ण चंद्र की चांदनी की शीतलता प्राप्त करने का पर्व! हमारे जीवन में भी 'पूर्णता' प्रगटाने **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** के व्यक्तिस्वरूप में 'पूर्ण ब्रह्म' आज के दिन धरती पर अवतरित हुए; मानो जीवों को सदा सनाथ बनाए रखती अक्षुण्ण परंपरा की मूल ज्योति प्रज्वलित हुई ! 'श्रीजी महाराज सर्व अवतारों के अवतारी हैं'–यह सर्वोपरि ज्ञान और उपासना बिंदास समझा कर उन्होंने स्वयं के स्वरूप की भी पहचान दी।

वे स्वयं कहते कि – *हम तो जीवों को 'माया' में से निकाल कर 'ब्रह्मरूप' करके महाराज को सौंपने का कार्य करते हैं।* यही दर्शाता है कि 'गुणातीत' का सेवन करे बिना 'गुणातीत' हो ही नहीं पाएंगे। यूं, 'ब्रह्मरूप' करके परब्रह्म में जोड़ कर हमें सदा-सर्वदा सुखी करने भगवान स्वामिनारायण ने गुणातीत स्वरूपों की भेंट दी है। **उन्हीं का सेवन करके हम गुणातीतभाव को पा सकेंगे।**

गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा आज के ही दिन प.पू. स्वामिजी को भागवती दीक्षा दी जानी और प.पू. दिनकरभाई का भी आज के ही दिन प्राकट्य होना हमें यही एहसास कराता है। तो, ऐसे गुणातीत स्वरुप - सच्चे संत का सेवन करके अनंतकाल से भीतर के रोगों से ग्रस्त हम अब अपनी साधना पूरी कर लें और हमारे हृदय में सच्ची शाश्वत शीतलता प्रगटा लें... यही एक उद्यम करने जैसा है।

आओ! हमें जाग्रत रखने वर्षों पूर्व **ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी** द्वारा निम्न प्रकार समझाई मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की अपरंपार महिमा, करुणा एवं दासत्वभक्ति का दर्शन करें!

पोषी पूनम के मंगलकारी दिन श्रीजी महाराज ने 'डभाण' गाँव में विशाल यज्ञ करके साकारब्रह्म को भागवती दीक्षा दी और जीतेजी ही आत्यंतिकी मुक्ति पाने का सरल मार्ग ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत और उनके तद्वद्भाव को पाए हुए मुक्तों द्वारा मानवजाति के लिए सदाकाल के लिए खुल्ला रख दिया...

'धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति'–ये चारों ही अंग तो मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी में चरम सीमा पर थे ही, पर महाराज के साथ इनका अविभाज्य संबंध था और... एक संकल्पमात्र से अनंत ब्रह्मांड की माया को खाक कर देने स्वामिश्री समर्थ थे। तब भी उन्होंने तुच्छ जैसे जीवों द्वारा अनेक अपमान सहन किए। इतना ही नहीं, बल्कि इनका भी भला करने बिल्कुल गरीब बन कर–सेवक के भी सेवक बन कर–निरंतर अस्तित्व विलीन होकर अतिसमर्थ की समझदारी का-कल्पना से परे का वे जीवन जिए और सब के जीवन में समा गए। यूं सभी के सुहृद् बन कर सभी में रसबस हुए और तब भी भीतर से तो सिर्फ एक महाराज के ही रह कर, एक महाराज की ही अपेक्षा रख कर एकांतिकी रीति, नीति और स्थिति का उन्होंने परिचय दिया है!

मुंजो सूरो-वालेरो वरु और उगा खुमाण जैसे पाप के पर्वत समान कड़वे जीवों को दिव्यता की अनुभूति करा के अपने संबंध से मीठे किए और 'वर्तमान-प्रण' धरा कर प्रभुपरायण सत्संगी बना दिए। सोरठ के हरिभक्तों को महाराज की मूर्ति के दर्शन, स्पर्श और समागम का सुख देकर भगवान व संत के लिए कुर्बानी देने वाला- सिर दे देने वाला, एक ऐसा अद्भुत समाज तैयार किया, जिसे देख कर **आचार्य रघुवीरजी महाराज** तक को पूछना पड़ा कि–

स्वामी! ऐसा समर्पण करने वाले सोरठ में आपने कितने तैयार किए हैं?

और इससे भी अधिक... २०० मुक्तों को ब्रह्मविद्या सिखाई व भगतजी महाराज, जागास्वामी एवं कृष्णजी अदाश्री जैसे अमर गुणातीतभावना के व्यक्तिस्वरुपों को घड़ कर **'गुणातीत अस्मिता'** का दर्शन कराया!

जूनागढ़ के इस जोगी का वारसा हमने शुद्ध गुणातीत परंपरा से परम पूज्य बापा (गुरुहरि योगीजी महाराज) में – परम पूज्य काकाश्री में–परम पूज्य पप्पाजी में हुबहु देखा है! **आज भी हम सब उसी गुणातीत अस्मिता की खुश्बू से अखंड सौभाग्यवान बने हैं और** गरजु होकर–सेवक के भी सेवक बन कर-गुलाम बन कर **यह वारसा अब हमें अपने वर्तन से जीवंत रखना है।**

१९७३ में प.पू. काकाश्री ने कहा था –

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी तो कहते हैं कि सभी गुलाम बनें- भूलका बनें। तो, अब इसी ध्येय की ओर नज़र रखें कि **हमें 'सद्‌गुरु' या 'महंत' बन कर गद्दी भोगनी नहीं है, बल्कि मुक्तों के पास मन मार कर–सेवक बन कर-दास बन कर–स्वभाव से रंक बन कर– गुलाम बन कर जीना है।**

हम **'बुज़दिल'** होंगे तो – सामने से ऐसी तैयारी ना दिखा सकेंगे, पर अपने भेजे में इतना तो जरुर उतारना ही पड़ेगा कि आख़िरकार कसनी में डाल कर भी हमें मिले स्वरूप हमें सेवक बना कर–गुलाम बना कर–रंक

बना कर ही छोड़ेंगे। इसमें हमारी कोई अकड़ या चूं-चा चलने वाली ही नहीं है। और अब... कहीं भाग भी नहीं सकते, इनकी नज़र में जो हम आ गए हैं! बहुत भाग-भाग कर भी भला हम प्रकृतिपुरुष से परे तो जा नहीं पाएंगे और... प्रकृतिपुरुष के भीतर तक तो ऐसी कोई जगह ही नहीं है जहाँ से हमें वापिस खींच लाने इनका हाथ नहीं पहुँचता होगा।

सो, अब तो प.पू. बापा (गुरुहरि योगीजी महाराज) जो बार-बार बोलते कि–

'जीवने जावुं हशे बीजे त्रीजे रे, जावुं पडशे रीझे खीजे रे.' यानि– जीव यदि इधर-उधर भटकना चाहेगा, तो भी उसे इसी रास्ते चलना पड़ेगा।

यह एक साखी नज़र समक्ष रखते हुए सावधान होकर इसी पल से ही हम ऐसे पुरुषों के पास **'मैं तुम्हारी गाय'** बन कर रहें!

९-१० नवंबर, दीपावली एवं नूतन वर्ष का प्रथम दिन... दीपावली का पर्व यानि श्री रामचंद्रजी द्वारा रावण पर विजय उपरांत इनके 'अवध' में लौटने का एक हर्षोत्सव! और... **हमारे जीवन में ऐसा हर्षोल्लास कायम बना रहे–इसी में ऐसे त्यौहारों को मनाने का औचित्य है।**

लेकिन, आज के माहौल में झाँकते हैं तो महत्त्वाकांक्षा की दौड़ में, एक-दूसरों से पंगे लेने में, एक-दूसरे से ईर्ष्या करते रहने में स्वभावरूपी कालिमा से भीतर में अंधेरा बढ़ता जा रहा है। वासनाएं-लालसा, झूठा बड़प्पन हाँसिल करने की दौड़ाभागी तथा अपने आपको कुछ सुपीरियर दिखाने की चाहना में व्यक्ति प्रभु से दूर होता जा रहा है। असल में जीव मात्र केवल बाहरी दिखावे, आडंबरों में फंस कर–निरंतर अपने ही 'स्व' कॉन्सियसनेस के सीमित दायरे-कोचले में फंसे रह कर एक 'बोझभरा' जीवन घसीट रहा है।

एक बात खूब पक्की है कि बाहर भले ही कितने भी दीयों का प्रकाश हो या हजारों बड़ी-बड़ी हॅलोजन लगा दी हों, पर यदि भीतर में ही अंधकार है, तो बाहर का यह उजाला निकम्मा है। इसलिए संकुचित मानसिकता, राग-द्वेष, मन में संजोया हुआ पुराना मैल छोड़ कर आकाश जैसी विशालता व निर्मलता में जाना खूब आवश्यक है।

हमारा यह सौभाग्य है कि प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व प.पू. स्वामिजी जैसी विभूतियों ने तो हमारे लिए राजमार्ग तैयार कर दिया है। इस पर दौड़ने के लिए **निर्दोषबुद्धि** व **सुहृद्‌भाव** दृढ़ करना अनिवार्य शर्त है। चूंकि हम भगवान व संत से जुड़ जरूर गए हैं; पर, 'हम भी हैं'–वो हमारी 'अस्मिता' गई नहीं है और... यही 'अवेरनेस' हमारे लिए अत्यंत बाधारुप-बंधनकारी बनी है। सो, यदि हर क्षण-सतत अंतर्दृष्टि और प्रार्थना करेंगे, तो प्रभु कृपा करके हमें हमारी कक्षा पर हमारा दोष दिखा देंगे ही। और... दोष दिखाने वाले– टोकने वाले भगवदी के साथ हमारा जितना सौहार्द होगा, उतनी जल्दी हमारी साधना की पूर्णाहुति होगी। साथ ही, धाम, धामी और मुक्तों की निष्ठा भी हमें **'तत्त्व से'** हो जाएगी।

दरअसल हम अनंत प्रकार की प्रकृति और भिन्न-भिन्न अंग वाले मुक्तों के बीच रहते हैं... सब की अपनी-अपनी अलग-अलग रीति-ढब होगी ही और... जीवमात्र प्रकृति के अधीन जीता है। इसी फर्क के कारण अनेक प्रकार की विपरीत परिस्थितियाँ-प्रसंग बनेंगे ही। परंतु, हमने यदि सभी में केवल प्रत्यक्ष स्वरूपों का संबंध देखा होगा और भजन की रेग्युलर आदत डाली होगी, तो हमारी प्रकृति का परिवर्तन अपने आप होता रहेगा।

इसी संदर्भ में हाल ही में **'चक दे इंडिया'** मूवी को देखने पर 'इन्फॉसीस' के चॅयरमेन–**श्री नारायन मूर्ति** द्वारा दिया प्रेस रीव्यू शायद हमें भीतर तक झंझोर देता है –

1. We have to identify as INDIANS first and rise above our affiliations with our States, Religions & Castes.

2. We must accept meritocracy and enthusiastically play the role we are best suited to.
3. We must embrace discipline to strictly follow every step required for SUCCESS.
4. We have to put in the interest of Nation first ahead of our personal interest subordinating our EGOS and BIASES.
5. We have to put in tremendous Hard Work and short term sacrifices for long term GLORY.

अपने देश का ऋण अदा करने – उसके उत्थान के लिए जब एक देशप्रेमी के मन में ये विचार उठते हैं, तो इन गुणातीत स्वरूपों ने तो कल्पना एवं बुद्धि से परे की हमारी आत्मा की हर क्षण हिफाज़त करी है। क्यों ना हम इनके थोड़े शब्दों को बदलें और ऐसे ही कृतसंकल्प होकर 'हमें मिले संत' के अंतर को 'हाश' दें?

१. वी हॅव टु आईडन्टीफाई एज़ **'भक्त'** फर्स्ट एण्ड राईज़ अबव अवर एफीलियेशन्स वीथ अवर **बॉडी एण्ड मॅन्टल कॉन्सियसनेस/ब्लड रिलेशन्स/ वर्ल्डली रिलेशन्स।**

२. वी मस्ट एक्सॅप्ट मिरिटोक्रसी एण्ड एन्थयूझिया-स्टीकली प्लॅ धी रोल वी आर बेस्ट 'स्यूटेड टु' **इन सत्संग।**

३. वी मस्ट एम्बरेस डिसीप्लिन टु स्ट्रीक्टली फॉलो एव्री स्टॅप रीक्वायर्ड फॉर **अवर स्पीरीच्युअल राईज़ एण्ड सक्सेस।**

४. वी हेव टु पुटइन धी इन्ट्रॅस्ट ऑफ **सत्संग** फर्स्ट अहेड ऑफ अवर पर्सनल इन्ट्रॅस्ट सबॉर्डीनेटींग अवर **इगॉज़ एण्ड सॅन्टीमेन्ट्स।**

५. वी हेव टु पुटइन ट्रीमॅन्डस हार्ड वर्क एण्ड शॉर्ट टर्म सेक्रीफाईसीस फॉर **एटेईनमेन्ट ऑफ सुपरामॅन्टल कॉन्सियसनेस/इटर्नल हॅपीनेस/ ब्लीस।**

सो, **जैसे कि प.पू. काकाजी अकसर कहते – वैसे रोज सुबह २० मिनिट तथा सायं २० मिनिट प्रार्थना करें** कि– *हे प्रभु! मुझे क्या करना, वो आप ही प्रेरणा करते रहना... 'मान' रूपी पाप से मुझे बचाना... दिल की सच्चाई से मैं सब को मान दे पाऊँ... सब में महाराज के 'संबंध' का दर्शन करके सेवा करता ही रहूँ – ऐसी मुझे प्रेरणा करना।*

तो, भगवान को सांगोपांग प्रगटाई हुई ये विभूतियाँ हमारी आत्मा में सच्चा प्रकाश-सच्चा आनंद प्रगटा ही देंगी। बाहर के दीप तो एक रात में बुझ जाते हैं, पर सत्पुरुष के अंतर की प्रसन्नता प्राप्त करने पर भीतर में प्रगटे दीप कभी नहीं बुझते और वह है प्रगट के जोग में आए मुक्तों की **'शाश्वत् दीवाली'**!

आओ, प्रत्यक्ष स्वरूप को राजी कर लेने की एक मात्र श्रद्धा व उमंग को नित्यनवीन रख कर मुक्तों के प्रति आत्मीयता की दृष्टि रखते हुए दिलों में प्रकाश के अखंड दीप प्रगटाएं और रोज **दीवाली व नूतनवर्ष मनाएं।**

✡✡✡

'श्रवण, मनन, निदिध्यासन'

✻ प.पू. काकाजी की परावाणी की कॅसेट में आया कि हमने तो खुल्ला रख दिया – एक व्यवस्था कर दी है। खाली तुम्हें **'स्वीचऑन'** करना है...

प.पू. काकाजी यह कहना चाहते हैं कि हमने सारा सॅटिंग करके दे दिया है। अब जैसे लॅपटॉप आ गया, ऑर्गेनाईज़र आ गया – सारे काम कैसे एकदम इज़ीली और स्पीडीली हो जाते हैं! बस, एक बटन दबाओ और एकदम हो जाता है। दस दिन के बाद के काम का भी टेन्शन लेकर नहीं घूमना पड़ता। फीड कर दो, तो 'पिप-पिप' रिमाईन्डर बजने लगता है।

वाकई, आध्यात्मिकता में भी **यूं भगवान स्वामिनारायण ने धरती पर 'गुणातीत' का अवतरण करा कर हमारा साधना मार्ग सरल कर दिया है।**

स्पीरिच्युआलीटी में यह बड़ी डॅव्लपमेन्ट-एड्वांसमेन्ट हुई है और...अब हमें तो कुछ करना ही नहीं है। फिर भी यदि हमें कठिन लगता है तो समझना कि हमें करना ही नहीं है। इससे ज्यादा और क्या आसान हो सकता है?

* संतों के प्रति **'पूज्यभाव'**, वो तो भारत की-हिन्दुस्तान की संस्कृति है। गेरूआ कपड़े के प्रति सबको **'पूज्यभाव'** सहज ही होता है। लेकिन, **'ये संत हमारे हैं'**, उनके प्रति ऐसी **'आत्मीयता'**– वो भावना का प्रदेश एन्टायरली अलग ही है।
* हम महिमा की बातें बोलते रहते हैं, लेकिन एन-मौके पर हमें कई चीजें हिला जाती हैं... एन-मौके पर हमें **'संबंध की महिमा'** नहीं रहती।
* भगवान ने हमें जहाँ जिस सॅटींग में रख दिया हो, वहाँ बड़े संत की आज्ञा में और उसके संबंध वाले भक्तों में निर्दोषभाव-दिव्यभाव रख कर यदि रहेंगे, तो जैसे लॅपटॉप-ऑर्गेनाइज़र-कम्प्यूटर वगैरह करते रहते हैं-वैसे सारा काम ऑटोमॅटिकली होता ही जाएगा।
* दूसरों को 'ज्ञान' समझा देने हम हरदम तैयार रहते हैं; लेकिन, मौके पर खुद कशमकश में रहते हैं कि ये करें या नहीं करें।
* कई-कितने पंडितों को खिलाने की अपेक्षा प्रगट भगवान के एक भगत को खिलाने का पुण्य अनेक गुणा मिलता है। हम यह बोलते जरुर हैं; पर दिल की सच्चाई से नहीं मानते कि प्रगट भगवान के भक्त की-संबंध वाले की 'वॅल्यु' कोई अलग ही है। **हमें लौकिक मूल्याकंनों की इंचीपट्टी से ही मेज़रमेन्ट करने की आदत पड़ी हुई है।**
* भगवान स्वामिनारायण और साकार ब्रह्म गुणातीतानंदस्वामिजी ने पृथ्वी पर आकर बड़ा क्रांतिकारी काम किया... स्पीरीच्युआलीटी में सारी डॅफिनेशन्स–मानो आल्फाबेट्स ही बदल दिए। जैसे कि– **मानवस्वरूप में प्रगट प्रभु से जिसने संबंध किया-वह 'भक्त'!**
  - कर्म कॉंड, पूजा-पाठ, तीरथ, तप, ध्यान, दान-पुण्य, व्रत, उपवास करता-कराता रहता हो,
  - कथाएँ-सप्ताहें-जगराते-चौकीयों में बैठता-करता रहता हो

  या

  - कंधे पर थैला लटका कर घर-घर भिक्षा माँगता फिरे

  उसे 'भक्त' नहीं कहा; बल्कि अर्जुन की भाँति भले ही लड़ाई-युद्ध करे, व्यावहारिक प्रवृत्तियों में सराबोर डूबा रहता हो, पर मानवस्वरूप में प्रगटे परब्रह्म तत्त्व को-कृष्ण को पहचाने उसे **'भक्त'** कहा।
* भगवान व संत के संबंध वालों में कैसे भी संजोगों में निर्दोषभाव-दिव्यभाव पकड़े ही रखेंगे तो 'विक्ट्री इज़ अवर्स'!
* संत की आज्ञा में रह कर काम करेंगे, तो हम सुखी होंगे, होंगे और होंगे ही।

  एक बात खूब समझ कर रखें – संत पहली बार जो आज्ञा करे, वो अपने लिए इज़ीएस्ट एन्ड शॉर्टेस्ट वॅ होगा। हमारे देहाध्यास एवं मन की वृत्तियों के चक्कर में फंस कर हम यदि उनसे दूसरी आज्ञा लेने जाएंगे, तो वो अधिक लम्बी व कठिन होगी।
* प.पू. काकाजी ने अपनी बातों में कैसी रहस्यपूर्ण बात बता दी कि **गुणातीत का अवतरण पृथ्वी के गोले पर ही है।** दूसरे ब्रह्मांड हैं, पर वहाँ गुणातीत नहीं होंगे। गुणातीत द्वारा पृथ्वी के गोले पर ही श्रीजी महाराज अखंड प्रगट रहेंगे और ये बात महाराज ने वचनामृत में भी लिखी है।
* हम विचारें कि– हम सत्संग में क्यों आए हैं? क्या पाने के लिए आए हैं? क्या साधना करने आए हैं और ये साधना क्यों करनी है? यदि यह समझ आ जाए तो और कुछ समझना बाकी ही ना रहे।

* यदि हमें कहीं से पता चले कि महरौली में अंधेरिया मोड़ पर फलां पेड़ के नीचे आज रात को अगर खोदेंगे, तो वहाँ से हीरे का चरू-घड़ा मिलेगा। हम जल्दी से जल्दी वहाँ पहुँचने की कोशिश करेंगे ना कि हम से पहले और कोई वहाँ पहुँच ना जाए। पर, **ऐसी गरज हमें संत की आज्ञा मानने की – प्रभु की मूर्ति प्राप्त करने की नहीं रहती।**
* हम सारे गाँव को समझाएंगे कि संत जिस समय जो भी कहें, वो कर ही लेना; पर कोई प्रसंग बनने पर हम ख़ुद मियां फुसकु हो जाते हैं... एन-मौके पर पँक्चर हो जाता है।
* एज्युकेशन पूरी होने पर प.पू. काकाजी को ऐसा था कि आफ्रिका जाकर पैसे कमा लेंगे। पर, प.पू. काकाजी को अपने दिमाग़ एवं अपनी इच्छाओं से खूब ज्यादा प्रायॉरिटी पर गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज थे। गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज ने आफ्रिका जाने मना किया कि पैसे चाहिए, वो तो यहाँ इंडिया में भी मिलेंगे। प.पू. काकाजी ने कुछ भी सोचे बिना तुरंत हाँ भर दी। **ऐसे में जब तक अपना इज़म-अपनी सोच, अपने वॅल्युएशन्स बीच में आते हैं, तब तक संत से हमारे संबंध में कसर है।** बापा की आज्ञा से प.पू. काकाजी यहीं रहे, तो उन्हें पैसे भी मिले और भगवान भी मिले।

  दरअसल, जैसा व्यवहार गुणातीत साधु को आता है, ऐसा तो हमें भी शायद नहीं आता होगा। **साधु को व्यवहार और मोक्ष – दोनों का ज्ञान है। पर हम उनमें विश्वास नहीं रखते।**
* साधु का काम क्या? साधु को 'माँ' कहा गया है। माँ को देखना – बच्चे ने लेट्रिन करी होगी, वॉमिट करी होगी, लार बाहर निकली होगी; तो माँ उसे साफ-सुथरा करके नहला-धुला कर, नए कपड़े पहना कर तैयार करके बाप की गोद में बिठा देगी।

  इसी प्रकार कैसे भी स्वभाव सहित जीव साधु के पास जाता है; तो साधु उसे साफ-सुथरा करके, मालिश-वालिश करके, उसके भीतर का सारा साफ करके फिर भगवान को – प्रगट स्वरूप को सौंपता है।

  सच्चा साधु संबंध में आए जीव को कभी ख़ुद में नहीं जोड़ेगा। ख़ुद में जोड़े वो पूर्ण साधु ही नहीं, बल्कि कच्चा साधु या सिद्ध पुरुष है। साधु को तो पता होता है कि जो भी उसके पास आए, उसके अंदर की कमियाँ दूर करके – उसकी सफाई करके भगवान का माल भगवान को ही सौंप देना है। वो भगवान की प्रॉपर्टी है, हम उसके मालिक नहीं हैं।
* प.पू. काकाजी को एक बार पूछा कि – काकाजी! 'मुक्त' और 'स्वरूप' में क्या फर्क? प.पू. काकाजी ने एक सैकण्ड में फट जवाब दिया कि –

  डायरेक्टली या इनडायरेक्टली या चालाकी करके अपने में जोड़े-वो 'मुक्त'! भगवान में जोड़े-वो 'स्वरूप'!
* जनरली 'साधु' की व्याख्या हम क्या समझते हैं कि जो हमेशा झुकता रहे, दो हाथ जोड़-जोड़ कर विनम्रता से बस 'हाँ-हाँ' करता रहे वह-'साधु'। हाँ, ये गुण भी होने चाहिए – पर, साधु का यह सामान्य लक्षण है।

  भगवान के भक्त के पक्ष के बारे कोई कॉम्प्रोमाईझ ना करे, यह – साधु का विशिष्ट लक्षण है।

  जैसे मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की बात हमने सुनी है कि 'अमरेली' गाँव के लिए गढड़ा वालों के साथ विवाद पड़ा, तो स्वामिश्री ने स्पष्ट कह दिया कि ये नहीं बनेगा। अमरेली जूनागढ़ के नीचे ही रहेगा और यदि गढड़ा के साधुओं को 'अमरेली' चाहिए, तो वे जूनागढ़ आकर रहें। ऊपरी दृष्टि से देखें तो साधु ऐसा करेगा क्या? पर, **'अमरेली' के भक्तों के पक्ष के ख़ातिर गुणातीतानंदस्वामिजी अड़ गए!**
* गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा से अपना खूब चलता कारोबार छोड़ कर प.पू. काकाजी नंदाजी के लिए-भक्त के लिए इलॅक्शन लड़ने साबरकांठा गए...

इलॅक्शन जीतने के कोई संजोग ही नहीं थे, पर प.पू. काकाजी को बापा का भरोसा कल्पना से परे का था। सो, विपरीत संजोगों में भी वे अडिग ही रहे। तो, दोनों चीजें हो गईं – नंदाजी की जीत हो गई और प.पू. काकाजी को प.पू. बापा की प्रसन्नता भी मिल गई।

❋ प.पू. साहेब बहुत छोटी उम्र से गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ अत्यधिक लगाव से जुड़ गए थे... प.पू. साहेब को बापा ने प.पू. काकाजी को सौंपे थे। सो, प.पू. साहेब को प.पू. काकाजी के साथ भी खूब ऍटेचमेन्ट हुआ था।

प.पू. साहेब स्टडी में खूब इन्टेलीजन्ट-फर्स्ट क्लास स्टुडन्ट थे। सो, उन्हें स्पीरीच्युअल एक्टीवीटीज़ में ज्यादा इनवॉल्व होते देख कर, उनके प्रोफेसर-कैमिस्ट्री डिपार्टमेन्ट के हेड पू. डॉ. आर. डी. पटेल साहेब प.पू. काकाजी पर थोड़े नाराज़ जैसे थे। पर, प.पू. काकाजी तो विज़नरी पुरुष थे... प.पू. काकाजी को गुरुहरि योगीजी महाराज के सामर्थ्य का ठीक से ख्याल था... प.पू. काकाजी ने पू. आर.डी. पटेल साहेब को बापा की सत्ता-सामर्थ्य एवं प.पू. साहेब की अनुपम प्रतिभा की यथार्थ महिमा समझाई और... आश्चर्य की बात है कि पू. डॉ. आर.डी. पटेल साहेब आज प.पू. साहेब के अमेरिका के सेन्टर में पूजा-आरती की सेवा में निमग्न रह कर अपना जीवन धन्य कर रहे हैं।

❋ प.पू. काकाजी अनेक बार अपने प्रवचन में कहते कि **प.पू. साहेब** यानि – **'ठहरावरहित गुरुमुखी'**! 'ठहरावरहित' मतलब – खुद का कोई ठहराव नहीं... अपना कोई डिसीज़न ही नहीं। 'गुरुमुखी' यानि – गुरु ने जो आज्ञा करी हो, उसमें ही हमारी भलाई होगी यह मान कर गुरु जो कहें वही करना।

❋ प.पू. काकाजी कहते कि –

समर्पण इज़ नॉट सबमिशन।

इट इज़ ए कॉन्सियसनेस।

कॉन्सियसनेस क्या?

मुझे मिले प्रभु सर्वोपरि हैं और वे मेरे हैं।

काल, कर्म, माया के वे प्रेरक हैं।

वे मेरे हित में ही सब सॅट कर देंगे।

हम तो संत जो कहें, बस वही करा करें।

'समर्पण' कोई भेड़चाल नहीं है कि बस एक के पीछे दूसरा चला करे। समर्पण तो शूरवीरों का काम है...

❋ प्रगट की 'निष्ठा' कोई अलग चीज है। हमें तो ग्रहों का, पनौती का, अपने मन का, ज्योतिष विद्या का, अन्य देवी-देवताओं का प्रभाव पड़ जाता है और फिर उलाहना देते हैं कि भगवान ने – काकाजी ने हमारा काम क्यों नहीं करा? पर हम **सिर्फ प्रभु के** टोटल होकर जीते हैं क्या? अपने भीतर में झाँके – **हम सच में उनके हैं क्या?**

❋ **भगवान 'आऊट ऑफ धी वे' जाकर भक्त के काम तभी करते हैं, जब भक्त** हर संजोग-परिस्थिति में पूर्ण निष्ठा से **टोटल उनका ही एक आधार पकड़े रखता है... सिर्फ उसका (प्रभु का) ही होकर रहता है।**

जैसे अर्जुन कैसे भी थे, लेकिन टोटल भगवान श्री कृष्ण के थे और युधिष्ठिर, भीष्म, द्रोणाचार्य वगैरह सब बड़ी-बड़ी वर्च्युझ – सद्गुण वाले थे; पर, टोटली श्री कृष्ण भगवान के नहीं थे। वे अपने मनमाने सत्य के – इज़म के – आदर्श के थे; तभी – 'इतना तो नहीं हो पाएगा, मैं प्रतिज्ञा नहीं तोड़ सकता, मैं झूठ तो नहीं बोल पाऊँगा' – ऐसा रहा।

❋ पू. निर्मलस्वामिजी ने गुरुहरि प.पू. पप्पाजी की मूर्तिप्रतिष्ठा महोत्सव पर बहुत अच्छी बात करी कि जिसके हृदय में भगवान की भक्ति हो, वो सेवक भूल से भी कभी यह नहीं कह पाएगा कि मेरे से इतना होगा और इतना तो नहीं हो पाएगा। बल्कि दिल की सच्चाई से ऐसा कहता रहेगा कि आप जो कहो वो करना है... आप राजी होओ बस... आप राजी होओ।

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 27.9.2007,	गुरुवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज – स्मृति पर्व
(2)	दि. 29.9.2007,	शनिवार	—	ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(3)	दि. 1.10.2007,	सोमवार	—	परम पूज्य दिनकरभाई का प्रागट्य दिन
(4)	दि. 5.10.2007,	शुक्रवार	—	श्रीजी महाराज – स्मृति पर्व
(5)	दि. 6.10.2007,	शनिवार	—	एकादशी, ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज – स्मृति पर्व
(6)	दि. 7.10.2007,	रविवार	—	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज – स्मृति पर्व
(7)	दि. 8.10.2007,	सोमवार	—	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी और ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज - स्मृति पर्व
(8)	दि. 12.10.2007,	शुक्रवार	—	नवरात्रे प्रारंभ
(9)	दि. 21.10.2007,	रविवार	—	**दशहरा**, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का पार्षदी दीक्षा दिन
(10)	दि. 22.10.2007,	सोमवार	—	एकादशी, व्रत
(11)	दि. 24.10.2007,	बुधवार	—	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी अंतर्धान तिथि
(12)	दि. 25.10.2007,	गुरुवार	—	**शरद्पूर्णिमा**, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी का प्रागट्य दिन प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन प.पू. दिनकरभाई की प्रागट्य तिथि
(13)	दि. 27.10.2007,	शनिवार	—	ब्रह्मस्वरूप प.पू. जागास्वामिजी की जन्मजयंती
(14)	दि. 5.11.2007,	सोमवार	—	एकादशी, व्रत
(15)	**दि. 7.11.2007,**	**बुधवार**	**—**	**धनतेरस – दिल्ली - मंदिर में 'धनपूजा', सायं 7:30 से 9:30**
(16)	दि. 8.11.2007,	गुरुवार	—	काली चौदस
(17)	दि. 9.11.2007,	शुक्रवार	—	**दीवाली**
(18)	**दि.10.11.2007,**	**शनिवार**	**—**	**अन्नकूटोत्सव – वार्षिक स्नेहमिलन, नूतन वर्ष – विक्रम संवत २०६४ प्रारंभ** **अन्नकूट आरती – सुबह 11:30 बजे**
(19)	दि. 11.11.2007,	रविवार	—	**भैयादूज**
(20)	दि. 15.11.2007,	गुरुवार	—	**लाभपंचमी**
(21)	दि. 21.11.2007,	बुधवार	—	प्रबोधिनी एकादशी – व्रत, तुलसी विवाह - प्रारंभ
(22)	दि. 24.11.2007,	शनिवार	—	**देवदिवाली**, तुलसी विवाह - समाप्त, श्री गुरुनानक जयंती

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine
Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :—
Printer, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO
***FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.**
A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052

TO,